>

Title Need to take measures for the revival of handloom & powerloom industries in Eastern Uttar Pradesh and other parts of the country.

श्री नीरज शेखर (बलिया): देश में किसानों के बाद सबसे ज्यादा आत्महत्यायें बुनकरों द्वारा की गई हैं। अभी हाल ही में पांच बुनकरों द्वारा गरीबी और बेरोजगारी की वजह से आत्महत्याएं की गई। पूर्वी उत्तर प्रदेश के आजमगढ़, मऊ, बलिया, गाजीपुर, वाराणसी व गोरखपुर कॉटन और बनारसी सिल्क उद्योग के बड़े केन्द्र हैं। इन जिलों के लाखों बुनकर जो मुख्यतः मुस्लिम समुदाय से हैं, कई पीढ़ियों से अपनी रोजी-रोटी कपड़ा उद्योग के माध्यम से चलाते आए हैं। आज पूर्वी उत्तर प्रदेश के बुनकरों की स्थिति अत्यंत बदहाल है। ज्यादातर बुनकर गरीबी और भुखमरी की वजह से टी.बी. जैसी घातक बीमारी की चपेट में हैं। सरकार द्वारा समुचित मार्केट फैसिलिटी उपलब्ध न कराए जाने से पूर्वी उत्तर प्रदेश के बुनकरों को अपने उत्पाद का उचित मूल्य नहीं मिल पाता। इसके अलावा चीन से आयातित नकली और सस्ते सिल्क से बाजार भरा पड़ा है। अभी मऊ की स्वदेशी कॉटन मिल को ताला लगा दिया गया और हजारों की संख्या में बुनकर बेरोजगार हो गए हैं और अपना पैतृक व्यवसाय छोड़कर या तो स्थानीय स्तर पर रिक्शा चला रहे हैं या निर्माण उद्योग में मजदूरी करने पर विवश हैं और जिनको वहां मजदूरी का काम नहीं मिल रहा वे महानगरों में मजदूरी करने के लिए पलायन कर रहे हैं।

मैं सदन के माध्यम से सरकार के समक्ष बुनकरों के लिए पांच सूत्री मांग करता हूं -

1. सरकार तत्काल प्रभाव से बुनकरों के लिए विशेष आर्थिक पैकेज की घोषणा करे और बैंकों को निर्देशित करे कि बुनकरों को 3 प्रतिशत की दर से ऋण उपलब्ध करायें।

2. बंद कपड़ा मिलों को पुनः चालू किया जाये जिससे बेरोजगार बुनकरों को रोजगार मिल सके।

3. सस्ते और नकली चाइनीज उत्पाद के आयात पर प्रतिबंध लगाया जाये।

4. समुचित बाजार सुविधा उपलब्ध कराई जाये, जिससे उनके शोषण को रोका जा सके।

5. बुनकरों के आत्महत्या, पलायन व गरीबी को रोकने के लिए रंगनाथ मिश्रा कमीशन की रिपोर्ट को जल्द से जल्द लागू किया जाये और बुनकरों सहित गरीब मुस्लिमों को 10 प्रतिशत आरक्षण सुनिश्चित किया जाये।